

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 16: स्रोत सिद्धांत और समकालिक समस्या; यूहन्ना का परिचय

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा

A. स्रोत आलोचना और एक स्रोत सिद्धांत [00:00-3:15]

ए: संयुक्त एसी; 00:00-9:55; सुसमाचार स्रोत और रूप आलोचना

पिछली बार जब हम बात कर रहे थे तो हमने कर संग्रहकर्ता के साथ प्रार्थना पर लूका की पुस्तक समाप्त की, और फरीसी, लगातार विधवा, प्रार्थना पर दो दृष्टांत, और हम समकालिक समस्या में कूद पड़े। हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच कुछ समानताओं को देख रहे हैं, जो तीन समकालिक सुसमाचार हैं। जॉन में, हमने दिखाया कि जॉन बहुत अलग था; जॉन का 92 प्रतिशत अद्वितीय सामग्री है, जबकि मार्क का केवल सात प्रतिशत अद्वितीय सामग्री है। हम कुछ समकालिक समस्याओं के बारे में बात कर रहे थे, ऐसे स्थान जहाँ अलग-अलग क्रम है, ऐसे स्थान जहाँ अलग-अलग शब्द हैं, जहाँ संघर्ष प्रतीत होता है, इसलिए हम कुछ संघर्षों पर चर्चा कर रहे थे, जिसे समकालिक समस्या कहा जाता है।

अब मैं सिनॉट्रिक गॉस्पेल के इतिहास पर जाना चाहता हूँ और वे किस तरह से आकार लेते हैं, ठीक है, हम सबसे पहले जिस पर विचार करने जा रहे हैं उसे स्रोत आलोचना कहते हैं। स्रोत आलोचना लिखित दस्तावेजों के साथ काम करती है, जहाँ लेखकों को पहले के दस्तावेजों से सामग्री मिलती थी। इसलिए, स्रोत आलोचक देर से, शायद उन्नीसवीं सदी में, बीसवीं सदी के पहले भाग में थे। यह आपको याद दिलाना चाहिए, अगर आप पुराने नियम में जेईडीपी सिद्धांत की मेरी कक्षा में रहे हैं, और हमने कक्षा में जेईडीपी सिद्धांत को खारिज कर दिया, जेईडीपी सिद्धांत की कुछ प्रमुख समस्याओं को दिखाने की कोशिश की। इसे अठारहवीं सदी में जूलियस वेलहॉसन द्वारा विकसित किया गया था, यह अब वास्तव में निष्क्रिय है। हालाँकि इसे पढ़ाया जाता है, वास्तव में, यह माना जाता है, मैं यह नहीं कहूँगा कि इसे अब बहुत पढ़ाया जाता है, लेकिन विश्वविद्यालयों में कई आलोचकों द्वारा इसे माना जाता है। यह स्रोत सिद्धांत अलग है, ऐसा नहीं है। जबकि जेईडीपी सिद्धांत ने कहा कि मूसा ने पेंटाटेच नहीं लिखा था, यह संभव है। तो यह विभिन्न स्रोतों को देखता है

और इसलिए एक स्रोत सिद्धांत जो कहता है वह यह है कि मूल रूप से एक स्रोत था, और वह उर-इवांगेलियम था - प्रारंभिक सुसमाचार। प्रारंभिक सुसमाचार का उपयोग तीनों लेखकों, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक द्वारा किया गया था, तीनों समकालिक सुसमाचारों ने इस उर-इवांगेलियम, इस प्रारंभिक स्रोत का उपयोग किया। तो मैथ्यू, मार्क और ल्यूक इतने समान क्यों हैं? वे इतने समान हैं क्योंकि वे सभी इस प्रारंभिक सुसमाचार रिकॉर्ड पर आधारित थे। यह यीशु का एक प्रारंभिक रिकॉर्ड था, और वे, उन तीनों ने, जब उन्होंने लिखा तो उससे उधार लिया और इसलिए इतनी समानताएँ हैं। इसे एक स्रोत सिद्धांत कहा जाता है।

अब एक स्रोत सिद्धांत समानताओं की व्याख्या करता है। यह बताता है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक कैसे समान हैं, लेकिन यह असमानताओं की व्याख्या नहीं करता है, कि मैथ्यू मार्क से अलग क्यों है या मैथ्यू ल्यूक से अलग क्यों है। तो यह एक स्रोत सिद्धांत था और कुछ लोगों ने इसे प्रस्तावित किया।

बी. स्रोत आलोचना: दो और चार स्रोत सिद्धांत [3:15-6:49]

यहाँ दो-स्रोत सिद्धांत कहा जाता है। अब इस मामले में दो-स्रोत सिद्धांत कहता है कि मार्कन प्राथमिकता है। मार्क पहले आया, और समानताएँ क्यों हैं? क्योंकि मार्क का उपयोग मैथ्यू द्वारा किया गया था, मार्क का उपयोग ल्यूक द्वारा किया गया था। और, वैसे, क्या ल्यूक हमें बताता है कि उसने स्रोतों का उपयोग किया? ल्यूक हमें ल्यूक 1:1-4 में बताता है, हमने देखा, कि आसपास कई खाते थे और वह प्रत्यक्षदर्शियों से बात करने जा रहा था। ल्यूक यीशु के साथ नहीं था, कभी यीशु से नहीं मिला था या यीशु को नहीं देखा था। वह प्रेरित पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा [2MJ] पर था। ल्यूक 50 ईस्वी के बाद तक ईसाई नहीं बना था और यीशु को मरे हुए बीस साल हो चुके थे। लेकिन फिर ल्यूक ऐतिहासिक शोध करता है और उन दस्तावेजों में से एक जिसे उसने जाँचा होगा, लोग सुझाव देते हैं, वह मार्क है और ल्यूक ने मार्क का इस्तेमाल किया और मैथ्यू ने मार्क का इस्तेमाल किया। मुझे मैथ्यू द्वारा मार्क का इस्तेमाल करने में थोड़ी परेशानी है क्योंकि जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो मैथ्यू बारह में से एक था और यीशु द्वारा दिए गए व्याख्यानों और यीशु द्वारा दिए गए संवाद और प्रवचनों में से एक था। इसलिए यह कहना कि मैथ्यू मार्क पर गुलामी की तरह निर्भर है,

यानी वह मार्क की नकल कर रहा है, मैथ्यू खुद इन घटनाओं में प्रत्यक्षदर्शी के रूप में मौजूद था। जबकि वास्तव में मार्क शायद वहां मौजूद नहीं था। मार्क यरूशलेम से था, इसलिए उसने यीशु को यरूशलेम में देखा होगा, लेकिन अब गलील में जो घटनाएँ हुईं, मैथ्यू वहाँ मौजूद था। मैथ्यू और मार्क के बीच एक दिलचस्प नृत्य है जिसे आपको करना होगा।

अब दो-स्रोत सिद्धांतों के साथ जो महत्वपूर्ण है वह है जिसे वे क्यू दस्तावेज़ कहते हैं। क्यू या *क्वैले*, क्वैले का मूल रूप से अर्थ है "स्रोत।" मेरा मानना है कि यह एक जर्मन शब्द है। अब स्रोत दस्तावेज़ तब होता है जब मैथ्यू और ल्यूक ऐसी चीजें साझा करते हैं जो मार्क में नहीं पाई जाती हैं। अगर आपको वह तालिका याद है जो मैंने रखी थी, तो लगभग 170 खंड थे जिन्हें मैथ्यू और ल्यूक ने एक साथ साझा किया था जो मार्क में नहीं पाए जाते हैं - वह वेन आरेख जैसी चीज। तो ये वे 170 होंगे, जो उन्हें मैथ्यू में मिले, वे ल्यूक में पाए गए, लेकिन वे मार्क में नहीं पाए गए। तो फिर मैथ्यू और ल्यूक के लिए एक विशेष साझा स्रोत था। इसलिए वे इसे दो-स्रोत सिद्धांत और क्यू कहते हैं, जब भी आप सुसमाचारों के बारे में पढ़ रहे होते हैं, तो आप क्यू के बारे में पढ़ते हैं, यही क्यू है। क्यू वह है जो मैथ्यू और ल्यूक साझा करते हैं जो मार्क में नहीं पाया जाता है। वे इसे क्यू स्रोत कहते हैं।

अब यह दो-स्रोत सिद्धांत है, और यदि आपके पास दो-स्रोत सिद्धांत है तो यहां चौथा स्रोत सिद्धांत है। और चार-स्रोत सिद्धांत कहता है कि यहाँ उर-मैथ्यू है, और उर-मैथ्यू ऐसी सामग्री प्रस्तुत करता है जो मैथ्यू के लिए अद्वितीय है। उर-ल्यूक आपको ऐसी सामग्री देता है जो ल्यूक के लिए अद्वितीय है, लगभग 500 खंड हैं जो ल्यूक के लिए अद्वितीय हैं। क्यू अभी भी यहाँ अंतर्निहित है। बहुत से लोग इस क्यू स्रोत को उन चीजों के रूप में स्वीकार करते हैं जो मैथ्यू और ल्यूक में पाई जाती हैं, लेकिन मार्क में नहीं पाई जाती हैं। इसलिए क्यू अभी भी एक भूमिका निभाता है; लेकिन आपके पास मैथ्यू अपनी अनूठी सामग्री के साथ है और ल्यूक अपनी सामग्री के साथ। इसे चार-स्रोत सिद्धांत कहा जाता है।

1950-60 के दशक में बहुत से लोगों ने इस सिद्धांत को माना होगा, और मुझे लगता है कि आज भी कुछ लोगों के पास चार स्रोत सिद्धांत है, यह इस समय थोड़ा पुराना हो गया है, हालांकि कुछ लोग क्यू का उल्लेख करेंगे, इसलिए आपको यह जानना होगा कि क्यू क्या है, और उर-मैथ्यू और उर-ल्यूक। अब, इसे स्रोत सिद्धांत कहा जाता है, स्रोत सिद्धांत ने कहा कि मूल रूप से ये

प्रारंभिक स्रोत लिखित स्रोत थे जिनका उपयोग मार्क, और मैथ्यू, और ल्यूक द्वारा किया गया था।
क्यू और वे चीजें वास्तविक लिखित स्रोत थे।

सी. रूप आलोचना और मौखिक परंपरा [6:49-9:55]

फॉर्म आलोचना गुंकल के साथ आई, और मध्य शताब्दी के मध्य में, फॉर्म आलोचना ने दस्तावेजों के बीच दस्तावेजों की नकल करने के बजाय लगभग साहित्यिक चोरी के अर्थ में ध्यान केंद्रित किया, हालांकि वे ऐसा कभी नहीं कहेंगे; लेकिन आप वास्तव में दस्तावेजों से नकल कर रहे हैं। फॉर्म आलोचकों ने सूचना के मौखिक प्रसारण में विशेषज्ञता हासिल की। इसलिए उन्होंने चीजों की मौखिकता पर अधिक जोर दिया। और जब चीजें मौखिक रूप से होती हैं, तो चीजें मौखिक रूप से बदलती हैं, और इसलिए आपको मौखिक रूप से सावधान रहना होगा। उन्होंने मौखिक परंपरा और दस्तावेजों के साथ काफी कुछ किया है। उदाहरण के लिए, मुझे लगता है कि यह चेकोस्लोवाकिया में है, जहाँ ये कवि, जैसा कि वे कहते हैं, ये कवि बारह सौ पंक्तियों के लंबे गीतों को याद करते हैं। ये लंबी कविताएँ, ये किंवदंतियाँ, ये मिथक, वे उन्हें याद करेंगे और फिर ये कवि एलेहाउस से एलेहाउस जाकर इन लंबी कविताओं को रिकॉर्ड करेंगे और सुनाएँगे जो किसी देश या किंवदंतियों या मिथकों का इतिहास बताती हैं। इसलिए मौखिक परंपरा वास्तव में बहुत बड़ी है।

हमारी संस्कृति में हम मौखिक रूप से बहुत ज़्यादा नहीं बोलते। क्या कोई मौखिक रूप से बहुत ज़्यादा याद रखता है। मुझे याद है कि अगर आप मिस्र के इतिहास में वापस जाएँ, तो मिस्र के लेखन की शुरुआत जब हुई, तो मेरा मानना है कि यह मिस्र में था। मिस्र के लोग नहीं चाहते थे कि उनके बच्चे लिखना सीखें क्योंकि उनका कहना था कि अगर वे लिखना सीख गए तो उन्हें याद नहीं रहेगा क्योंकि वे बस इसे लिख देंगे और उन्हें याद नहीं रहेगा कि हमने उन्हें क्या बताया है। इसलिए लिखित और मौखिक के बीच यह संघर्ष था। और आज भी हम इसे लिखित और मौखिक के बीच कुछ हद तक पाते हैं। इसलिए ये लोग, फॉर्म आलोचक मौखिक और मौखिक किंवदंतियों के बारे में ज़्यादा बात करते हैं, मूल रूप से मौखिक किंवदंतियाँ नीचे आती हैं और इसलिए जो होता है वह यह है कि वे चीजों को शैलियों, विभिन्न प्रकार के साहित्य में शेड्यूल करते हैं।

जब आप मौखिक सामग्री से निपट रहे होते हैं तो आपको अपने श्रोताओं के लिए मौखिक

रूप से चीजों को सेट करने की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिए। अगर मैं आपसे कहता हूँ, "एक बार की बात है," तो आप तुरंत जान जाएंगे कि आपको एक कहानी मिलने वाली है, यह क्या है? यह किसी तरह की दंतकथा है, कोई परीकथा है; आपको कोई कहानी मिलने वाली है। "एक बार की बात है एक अमीर आदमी था, एक गरीब आदमी था," आपको एक कहानी मिलने वाली है, एक बार की बात है। तो इस तरह की बातें आपको एक बार की बात बताती हैं।

इसलिए अलग-अलग शैलियाँ हैं, अलग-अलग तरह के साहित्य मौखिक रूप से गढ़े जाते हैं। उनमें से एक होगी घोषणा की कहानी: यीशु की घोषणाएँ जब वह विवादास्पद परिस्थितियों में थे। "इन शास्त्रियों और फरीसियों, कपटियों पर हाय" और फिर यीशु चले गए। "हे शास्त्रियों और फरीसियों, कपटियों पर हाय, तुम कप के बाहर की सफाई करते हो और कप के अंदर हर तरह की गंदगी होती है।" और इसलिए अगर तुम कप के बाहर की सफाई करते हो तो क्या फायदा अगर अंदर गंदा है? यीशु की ये घोषणा की कहानियाँ इस तरह की चीजों को स्थापित कर रही हैं।

डी. शैलियाँ: चमत्कार, कथाएँ और दृष्टांत [9:55-12:42]

बी: संयुक्त डी.एफ.: 9:55-17:41; मौखिक से लिखित में स्विच करें

यीशु की चमत्कारिक कहानियाँ। आपके पास मूल रूप से दो प्रकार की चमत्कारिक कहानियाँ हैं। एक चिकित्सीय चमत्कार होगा। दूसरा गैर-चिकित्सीय चमत्कार होगा। चिकित्सीय चमत्कार तब होगा जब आपके पास एक सूखा हुआ हाथ वाला व्यक्ति होगा, यीशु कहते हैं कि तुम जानते हो कि तुम्हारा हाथ ठीक हो जाएगा, और वह व्यक्ति अपने हाथ का उपयोग कर सकता है। तो यह एक चिकित्सीय चमत्कार होगा। एक और चिकित्सीय चमत्कार होगा, आरंभ में, यीशु पीटर की सास के पास जाते हैं। पीटर की सास थी; यीशु उसके पास जाते हैं और उसे तेज बुखार होता है। यीशु पीटर की सास को बुखार से ठीक करते हैं। आपके पास एक महिला है जिसे रक्तस्राव हो रहा था और यीशु उसे ठीक करते हैं। ये सभी चिकित्सीय चमत्कार हैं। एक चमत्कार जो गैर-चिकित्सीय चमत्कार है वह यीशु का पानी पर चलना होगा। उसने किसी को ठीक नहीं किया लेकिन वह पानी पर चला। तो यह एक गैर-चिकित्सीय चमत्कार होगा जहाँ यीशु ऐसा कुछ करता है। यीशु नाव पर चढ़ते हैं और कहते हैं, "लहरें शांत हो जाएँ," और हवा उनकी बात मान लेती है और सब कुछ शांत

हो जाता है। यह भी एक गैर-चिकित्सीय चमत्कार होगा।

यीशु के बारे में कहानियाँ रूपांतरण जैसी होंगी, जहाँ यीशु के बारे में कहानी है, कुछ ऐसा जो यीशु ने किया। यीशु के बारे में कहानियाँ और फिर हमारे पास यीशु की बातें हैं। मुझे लगता है कि मैं बस याद करने की कोशिश कर रहा था लेकिन मैं उद्धृत कर रहा था, यीशु ने कहा, "एक कार्यकर्ता अपने वेतन का हकदार है।" तो यीशु के पास ये कहावतें हैं, आप कह सकते हैं, "धन्य हैं वे जो हृदय से शुद्ध हैं, क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे।" वे आनंदमयी बातें ऐसी कहावतें हैं, जो यीशु ने ज्ञान की तरह ऋषि में कही थीं। फिर जुनून की कहानी है। जुनून की कहानी तब की है जब सैनिकों ने यीशु को पीटा था। वे एक तरह की विशेष कहानियाँ हैं जिन्हें गढ़ा जाएगा।

फिर दृष्टांत और मैं बस एक दृष्टांत स्थापित करता हूँ अगर मैं आपसे कुछ शब्द कहूँ, "स्वर्ग का राज्य ऐसा है," आप जानते हैं कि आपको अगला दृष्टांत मिलेगा। तो, मैं इसे इस तरह से स्थापित करूँगा, "स्वर्ग का राज्य सरसों के बीज जैसा है, सबसे छोटा बीज या एक छोटा सा बीज बड़ा होकर एक बड़ा पुराना पौधा बन जाता है, पक्षी हवा में आते हैं और शाखाओं में बसेरा करते हैं, दृष्टांत, और इस तरह आपको यीशु मिलते हैं, स्वर्ग का राज्य ऐसा है, दृष्टांतों को आकर्षक कहानियों के रूप में देना। लेकिन, फिर दृष्टांतों के बारे में रहस्य भी है। कुछ लोग उन्हें समझते हैं और कुछ लोग नहीं।

तो आपको यह मौखिक मिलता है जो कि फॉर्म आलोचना द्वारा प्रदर्शित होता है। फॉर्म आलोचकों की मौखिकता स्रोत आलोचना के विपरीत है, जहां स्रोत आलोचना अधिक लिखित दस्तावेज और शिष्यों की नकल थी।

ई. चर्च ने लिखित सामग्री की ओर क्यों रुख किया: प्रेरितों की मृत्यु [12:42-15:20]

तो, क्या शिष्य मौखिक कहानियों को जानते होंगे, क्या वे मौखिक कहानियाँ आगे बढ़ाई जाएँगी। यीशु ने अपने शिष्यों को बताया। फिर, यीशु ने खुद क्या लिखा? हमारे पास यीशु द्वारा लिखित कुछ भी नहीं है। यीशु, एक अर्थ में, सुकरात की तरह हैं। क्या आपको याद है कि सुकरात ने वास्तव में कुछ भी नहीं लिखा था? यह प्लेटो था जो उनके शिष्य थे जिन्होंने सुकरात की शिक्षाओं को लिखा था, जो सुकरात की समस्या कहलाती है। प्लेटो ने जो लिखा, उसमें से कितना वास्तव में

सुकरात का है और कितना प्लेटो ने सुकरात के मुँह में वापस वही डाला जो वह चाहता था कि सुकरात कहे? तो, आप सुकरात और प्लेटो के बीच कैसे अंतर करते हैं? लेकिन यहाँ यीशु के साथ आपको मौखिक, लिखित मिला, शिष्यों ने इसे सुना होगा। उन्होंने इन कहानियों को सुना होगा और इन कहानियों को मौखिक रूप से आगे बढ़ाया होगा और वे बातें बताई होंगी जो वे जानते थे। प्रेरित पूरे समय यीशु के साथ थे।

तो फिर प्रारंभिक चर्च में मौखिक कहानियों से लिखित रूप में जाने का यह कदम क्यों उठाया गया। मौखिक और लिखित के बीच यह बदलाव क्यों हुआ? मुझे लगता है कि तीन चीजें हैं जो सामने आती हैं, शायद और भी हैं, लेकिन ये तीन चीजें तुरंत दिमाग में आती हैं। सबसे पहले, आप चीजों को लिखना क्यों चाहते थे, इसका कारण यह था कि प्रेरित मर रहे थे। प्रारंभिक चर्च को दुविधा का सामना करना पड़ा। जब तक प्रेरित मौजूद थे, प्रेरित कह सकते थे, "ओह, नहीं, नहीं, यीशु ने ऐसा नहीं कहा, यीशु ने ऐसा कहा।" प्रेरित चीजों की जांच कर सकते थे और बता सकते थे कि क्या सही था और क्या गलत। तब प्रेरित यीशु के बारे में कहानियाँ बता सकते थे क्योंकि वे वहाँ थे, और उन्हें वे कहानियाँ याद थीं। लेकिन प्रेरित मर रहे थे और जैसे-जैसे प्रेरित मरते गए, उन्हें संरक्षित करने के लिए उनकी कहानियों को लिखने की आवश्यकता थी। तो कुछ अर्थों में प्रेरितों की मृत्यु ने ही इसे प्रेरित किया। मैं इसे इस तरह से कहूँगा, सुसमाचारों के लेखन को किसने प्रेरित किया? यह संभव है कि प्रेरितों की मृत्यु के समय, जब वे उन ईसाइयों को देख रहे थे जो उस समय यीशु के साथ मर रहे थे, और उन्हें एहसास हुआ कि वे अब लोगों को यीशु की कहानियाँ बताने के लिए नहीं रहेंगे। इसलिए उन्होंने कहानियाँ लिखीं। तो यह एक बड़ा कारक होगा कि आप इसे क्यों लिखना चाहते हैं। मौखिक के साथ समस्या क्या है? मौखिक के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि इसे तैयार किया जा सकता है और आप मौखिक के साथ श्रोताओं को लिखित से कहीं अधिक आकर्षित कर सकते हैं। मौखिक के साथ समस्या यह है कि एक बार जब आप इसे कहते हैं, तो यह चला जाता है जब तक कि आपके पास वीडियो कैमरा न हो, और आप इसे इस तरह से संरक्षित करने की कोशिश कर रहे हों लेकिन अन्यथा मौखिक चला गया था। आप इसे बोलते हैं, कमरे में मौजूद लोग इसे सुनते हैं, और जब वे बाहर जाते हैं, तो यह या तो उनके दिमाग में होता है या यह उनके दिमाग में नहीं होता है और इसलिए जब वे इसे आगे बढ़ाते हैं तो आप मौखिक रूप से चीजें

खो देते हैं। इसलिए प्रेरितों की मृत्यु के परिणामस्वरूप मौखिक से लिखित की ओर एक आंदोलन हुआ।

एफ. चर्च ने लिखित पर स्विच क्यों किया: विधर्म और संगठन [15:20-17:41]

चीजों को लिखने की एक और ज़रूरत यह थी कि शुरुआती चर्च में विधर्मी घुसने लगे थे। और ग्रीक कक्षा में, अब, हम 1 यूहन्ना पढ़ रहे हैं, और 1 यूहन्ना में ये सेसेशनिस्ट हैं। ये लोग हैं जिन्होंने चर्च छोड़ दिया। यह बहुत बड़ा तनाव है क्योंकि ऐसा लगता है कि ये लोग जो चर्च छोड़ गए थे, अब लोगों को चर्च से बाहर निकालने की कोशिश कर रहे हैं। वे विश्वासियों के प्रति घृणा प्रकट कर रहे हैं, और यूहन्ना उन्हें बताने की कोशिश कर रहा है, "नहीं, नहीं, विश्वासियों तुम अपने भाइयों से प्यार करते हो और इसी तरह तुम जानते हो कि तुम उनके प्यार से ईसाई हो।" तो इन सेसेशनिस्टों के खिलाफ जो चर्च में जल्दी ही बाहर हो गए, जरूरी नहीं कि पहली सदी में। शायद एक प्रोटो-गनोस्टिसिज्म, लेकिन दूसरी सदी में निश्चित रूप से आपको गनोस्टिसिज्म मिल जाएगा। गनोस्टिक चीजों के बारे में सोचने का बहुत ही अलग तरीका है। इसलिए प्रारंभिक चर्च को लिखित दस्तावेजों की आवश्यकता थी ताकि लोग उनका अध्ययन कर सकें और वे सही निष्कर्ष निकाल सकें, उन विधर्मियों के विपरीत जो यह कहने की कोशिश कर रहे हैं, "नहीं, नहीं, यह ऐसा नहीं था; यह वैसा था।" और फिर प्रारंभिक चर्च में विधर्मियों के उदय के साथ लिखित दस्तावेजों के साथ आपको चीजों को लिखित रूप में रखने की आवश्यकता थी।

और फिर तीसरा, चर्च को बस संगठन की जरूरत थी। शुरू में चर्च छोटा होता, कुछ लोग बच जाते और एक घर में एक छोटा चर्च होता और ऐसी चीजें, यह कोई बड़ी समस्या नहीं थी। आप जानते हैं कि जब आपके पास तीन या उससे ज़्यादा लोग होते हैं; यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। लेकिन जैसे-जैसे चर्च बढ़ता है, आपको एक तरह के संगठनात्मक ढांचे की जरूरत पड़ने वाली है। आपको एल्डर्स की जरूरत पड़ने वाली है, आपको डीकन की जरूरत पड़ने वाली है, आपको वित्त को संभालने के लिए लोगों की जरूरत पड़ने वाली है, आपको ऐसे लोगों की जरूरत पड़ने वाली है जो बाहर जाकर प्रचारक हों, आपको कई तरह के लोगों की जरूरत पड़ने वाली है। इसलिए एक बार जब चर्च में संरचना आनी शुरू हो जाती है, तो आपको लोगों को यह सुनिश्चित करने के लिए

प्रशिक्षण की जरूरत पड़ने वाली है कि वे ईसाई धर्म को समझें। आप चीजों को जांचने के लिए गूगल या ऑनलाइन नहीं जा सकते थे और इसलिए मूल रूप से आपको इसे लिखित रूप में रखना पड़ता था ताकि आपके संगठन के संदर्भ में ईसाई धर्म में एकरूपता हो, कि वे वास्तव में ईसाई हों, और ईसाई तरीके से संगठित हों। तो ये तीन कारण होंगे: प्रेरितों की मृत्यु, कलीसिया में विधर्मियों का आना, और कलीसिया में संगठन की आवश्यकता, इन बातों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की मांग करेगी।

जी. संक्षिप्त अंतरों की व्याख्या: उद्धरण, दो बार, और अनुवाद [Q TTWPP] [17:41-21:07]

सी: संयुक्त जीएच; 17:41-24:44; संक्षिप्त “समाधान”

अब, मैं इन पर जल्दी से चर्चा करना चाहता हूँ। ये समकालिक सुसमाचारों में अंतरों को समझाने के लिए सामान्य नियम हैं। और मैंने एक तरह से Q-TTWPP का इस्तेमाल किया है या आप, मुझे वहाँ थोड़ी तुतलाहट मिली, लेकिन आप Q- द्विप या Q-टिप कह सकते हैं, इस तरह की चीज़। मैं जो इस्तेमाल कर रहा हूँ वह एक एक्रोस्टिक है जो उन छह चीज़ों का मूल तरीका है जिन्हें हम जल्दी से देखेंगे। हम इनमें से कुछ के बारे में पहले ही बात कर चुके हैं। जब समकालिक सुसमाचारों में अंतर होता है, तो कभी-कभी वे अंतर, "यह यीशु है, यहूदियों का राजा," "यहूदियों का राजा," "नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा।" मसीह के सिर के ऊपर शीर्षक पर क्या था? यह संभव है कि उद्धरण, आपको उद्धरण को उद्धरण चिह्नों के रूप में नहीं सोचना चाहिए। बहुत बार यीशु ने अरामी भाषा में बात की और हमारे नए नियम में जो हम ग्रीक में पा रहे हैं वह वैसे भी उनके द्वारा कही गई बातों का अनुवाद है। तो ये सारांश हैं, ये सार हैं, यीशु ने जो कहा उसका संक्षेपण। हमारे पास यीशु द्वारा दिया गया पूरा दो घंटे का प्रवचन नहीं है। हमारे पास कुछ ऐसा है जिसे बताने में दस मिनट लगे होंगे। तो यह एक सारांश है, यह एक सार है। उसी तरह जैसे आप अपने दोस्त को उद्धृत करते हैं और कहते हैं, "अरे, जॉनी ने दूसरे दिन जेन के बारे में यह कहा था।" आप सटीक शब्द नहीं कहते हैं, आप केवल सारांश देते हैं। इसलिए उद्धरणों के साथ सावधान रहें, वे शब्दशः उद्धृत नहीं कर रहे हैं।

यीशु ने इनमें से कई काम दो बार किए। यह बहुत संभव है कि यीशु ने अलग-अलग

वातावरण में एक ही उपदेश दिया हो और एक ही संदेश दिया हो। यह बहुत संभव है कि यीशु ने अपनी कुछ शिक्षाएँ एक से ज़्यादा बार और अलग-अलग श्रोताओं को दी हों। यह संभव है कि एक लेखक इस स्रोत को उद्धृत करता हो और दूसरा लेखक उस स्रोत को उद्धृत करता हो और वे अलग-अलग हों, लेकिन वे यीशु की एक ही शिक्षाएँ हैं।

इसलिए कई चीजें हुई हैं, जब यीशु ने बारह को भेजा, तो उसने संभवतः उन्हें कई बार भेजा। वैसे यह संभव है, और मुझे इसे पहले ही उठाना चाहिए था और मैंने ऐसा नहीं किया, इसलिए अब मैं इसे करता हूँ। डॉ. रॉबर्ट न्यूमैन, मेरा मानना है, ने मूल रूप से कहा कि मंदिर की सफाई जॉन ने जल्दी की, मैथ्यू मार्क और ल्यूक ने बाद में की। यह बहुत संभव है कि मंदिर की सफाई खुद दो बार हुई हो। यीशु ने इसे जल्दी किया हो सकता है, उन्होंने इसे देर से किया हो सकता है। वास्तव में यीशु ने इसे कई बार किया हो सकता है और उनमें से कुछ रिकॉर्ड नहीं किए गए हैं।

अनुवाद, हमने उल्लेख किया कि यीशु हिब्रू में नहीं, बल्कि अरामी भाषा में बोलते थे। उस समय यहूदियों के बीच अरामी भाषा थी। जब वे 586 ईसा पूर्व में बेबीलोन गए थे, तब अरामी भाषा थी। उन्हें नबूकदनेस्सर और दानिय्येल द्वारा ले जाया गया था। जब वे बेबीलोन गए तो उन्होंने अरामी भाषा सीखी। वैसे, हिब्रू सिर्फ एक कनानी बोली थी। हिब्रू सिर्फ एक कनानी बोली थी। वे कनान की भूमि पर बोलते थे। हिब्रू एक कनानी बोली थी जिसे अब्राहम और उनके परिवार ने कनान आने पर सीखा था। लेकिन जब वे 586 ईसा पूर्व में बेबीलोन चले गए और बेबीलोन से वापस आए तो उन्होंने अरामी भाषा बोली। उस समय अरामी भाषा दुनिया की भाषा थी। अरामी भाषा हिब्रू की एक बहन भाषा है, जैसे स्पेनिश और पुर्तगाली, वे बहुत समान हैं। यीशु ने अरामी भाषा बोली, लेकिन अब समस्या क्या है। रोमनों ने इसे अपने कब्जे में ले लिया है, और जब रोमनों ने इसे अपने कब्जे में ले लिया, तो उन्होंने ग्रीक भाषा को सार्वभौमिक भाषा के रूप में इस्तेमाल किया। फिर अंततः चर्च में बहुत लंबे समय तक लैटिन भाषा का बोलबाला रहेगा और 1000 से अधिक वर्षों तक लैटिन वुल्फोट का उपयोग किया जाएगा। इसलिए अनुवाद, यीशु ने अरामी भाषा में बात की, हमारा नया नियम ग्रीक भाषा में है। इसलिए उनके वास्तविक शब्दों का अनुवाद किया जाना था।

एच. समकालिक अंतरों की व्याख्या: साक्षी, उद्देश्य और भाग/संपूर्ण [21:07-24:44]

प्रत्यक्षदर्शी। अलग-अलग प्रत्यक्षदर्शी अलग-अलग बातें बताते और देखते हैं। और इसलिए एक आदमी यीशु के ठीक बगल में था और उसने यीशु को यह कहते हुए सुना, दूसरा आदमी मेज के दूसरी तरफ था और रास्ते में था। वह एक युवा व्यक्ति को देख रहा था जो कोने में था, और इसलिए वह नहीं समझ पाया कि यीशु ने वहाँ क्या कहा। अलग-अलग गवाह या अलग-अलग कहानियाँ थीं और हमने उस महिला के बारे में बताया जो टेलीफोन पोल के पास, टेलीफोन पोल के पास एक बस से टकरा गई थी और हमने बस दो कहानियाँ दो अलग-अलग प्रत्यक्षदर्शियों की बताईं। बास्केटबॉल खेल में दो अलग-अलग रेफरी एक अलग तरीके से फाउल का फैसला करते हैं क्योंकि उन्होंने अलग-अलग चीजों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा; अलग-अलग गवाह, अलग-अलग कहानियाँ, अलग-अलग दृष्टिकोण।

उद्देश्य। अब उद्देश्य महत्वपूर्ण है और मुझे लगता है, मैं बस यह स्पष्ट कर दूँ कि उद्देश्य के साथ, लेखक, लेखक अपनी कहानियों को एक निश्चित तरीके से गढ़ने जा रहा है। उसके पास एक निश्चित तरीका है जिससे वह कुछ प्रस्तुत करना चाहता है। इसलिए लेखक वास्तव में महत्वपूर्ण है और वह जो संदेश प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है, लेखक यीशु और फिर दर्शकों को कैसे देख रहा है। लेखक दर्शकों के लिए लिख रहा है। और इसलिए वह अपनी कहानी दर्शकों के अनुसार गढ़ेगा और जो उनके लिए महत्वहीन है और जो उसे लगता है कि दर्शकों में प्रतिध्वनित होगा। तो मूल रूप से आपको लेखक और दर्शकों के बीच यह नृत्य मिलता है।

मैथ्यू यहूदियों को लिखने जा रहा है, और इसलिए वह अलग तरह से लिखने जा रहा है, वह हर जगह पुराने नियम को उद्धृत करने जा रहा है क्योंकि यहूदी पुराने नियम को जानते हैं। मार्क रोमियों को लिख रहा है, और इसलिए मार्क गैर-यहूदी संदर्भ में लिखने जा रहा है, वह पुराने नियम को उद्धृत नहीं करने जा रहा है, वह इसे कुछ हद तक उद्धृत करेगा लेकिन मैथ्यू जितना महत्वपूर्ण नहीं होगा। मार्क भीड़ और शोर से अलग-अलग विषयों को उठाएगा जो रोम के साथ फिट बैठते हैं। दूसरी ओर, ल्यूक एक डॉक्टर है और वह विधवाओं और एकल बच्चों को चुनता है और कुछ खास तरीकों से बीमारियों का वर्णन करता है। वह सबसे बेहतरीन थियोफिलस के लिए

दर्शकों के लिए चीजें चुनता है। वह इस आदमी के लिए लिख रहा है जो जाहिर तौर पर एक सरकारी अधिकारी है। वह पॉल के मामले या कुछ और के बारे में लिखने की कोशिश कर रहा है और वह चीजों को उस तरह से झुकाने जा रहा है। जॉन अलग तरह से लिख रहा है। तो मूल रूप से लेखक और दर्शक पुस्तक को समझने के लिए आपको लेखक और दर्शकों और उन दोनों के बीच नृत्य को समझना होगा। तो इस तरह से संदेश को आकार दिया जाएगा।

तो, और फिर भाग/पूरा, क्या दो राक्षस थे या केवल एक राक्षस था? और इसलिए कुछ कहानियों में हमें पूरी कहानी सुनाई जा रही है। दूसरों में, एक बहुत ही संक्षिप्त कहानी। मार्क अक्सर बहुत संक्षिप्त है। उन कहानियों को फिर मैथ्यू और ल्यूक द्वारा विकसित किया जाता है, और इसलिए भाग/पूरा प्रकार के संबंध। तो यह Q-TTWPP है, और फिर इन्हें अंतर के कारणों के समाधान के रूप में लिया जा सकता है। यह समकालिक समस्या है, जैसा कि वे इसे कहते हैं, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच अंतर को उजागर करना। अब जॉन जैसा कि हमने कहा, जॉन पूरी तरह से अलग है। तो हम अब जॉन पर एक नज़र डालने जा रहे हैं।

तो सिनॉट्रिक समस्या के बारे में हमारी चर्चा यहीं समाप्त होती है। कुछ लोग अपना पूरा जीवन सिनॉट्रिक समस्या, समानताओं, अंतरों और मैथ्यू, मार्क और ल्यूक द्वारा अपनी कहानी को अलग-अलग तरीके से बताने की सभी बारीकियों का अध्ययन करने में बिता देते हैं। उनमें से कुछ सिनॉट्रिक विद्वान वास्तव में अच्छे लोग हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन यीशु का अध्ययन किया है, डेरेल बॉक और उनके जैसे अन्य लोगों ने, सेमिनरी और अन्य स्थानों पर। उन्होंने बहुत बढ़िया काम किया है।

I. यहन्ना की पुस्तक का परिचय [24:44-28:09]

डी: आईएम; 24:44-39:09; जॉन का यहदीपन

अब, मैं आगे जो करना चाहता हूँ, वह है जॉन की पुस्तक पर जाना। सबसे पहले, मैं देखता हूँ कि क्या मैं यहाँ ऐसा कर सकता हूँ। मैं स्क्रीन को थोड़ा नीचे ले जा रहा हूँ और हम जॉन पर जाएँगे। अब, जॉन, जैसा कि हमने कहा है--जॉन का एक बड़ा हिस्सा है जो अन्य सुसमाचारों से बिल्कुल अलग है। जॉन का 92% अद्वितीय सामग्री है, 92%। केवल 8% ओवरलैपिंग है। इसलिए

समकालिक सुसमाचार, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, हमें एक दृष्टिकोण देते हैं; जॉन हमें एक अलग दृष्टिकोण देता है। यह बहुत अच्छा है, जितना अधिक हम यीशु के बारे में जान सकते हैं उतना बेहतर है। इसलिए मैथ्यू में, यीशु मसीह राजा और स्वर्ग का राज्य है। मार्क में, आपको पीड़ित सेवक, अद्भुत पीड़ित सेवक मिलता है, और ल्यूक में, आपको यीशु के विकास और उन सभी अद्वितीय दृष्टान्तों और प्रार्थनाओं को दिखाने वाला परिपूर्ण मनुष्य मिलता है। जॉन में, यीशु को भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। यदि आपने कभी लोगों से बहस की है या यहोवा के साक्षी से चर्चा की है और ऐसे लोगों से जो यीशु को ईश्वर के रूप में देखते हैं, लेकिन ईश्वर के रूप में नहीं। उनके लिए यीशु यहोवा नहीं है और वे वहाँ एक वास्तविक अंतर करेंगे। "शुरुआत में वचन [लोगो] था, वचन ईश्वर के साथ था और वचन ईश्वर था," जैसा कि वे अपने न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन में करते हैं, दुर्भाग्य से यह गलत है। लेकिन यही उनका मानना है और मैंने अक्सर कहा है कि जिन यहोवा साक्षियों से मैंने बात की है, उनमें से कोई भी ग्रीक नहीं जानता, अगर आप उनसे सीधे पूछें। मैंने उन्हें ग्रीक न्यू टेस्टामेंट दिया है। उनमें से कोई भी इसे पढ़ने में सक्षम नहीं है, जिसमें उनके कुछ नेता भी शामिल हैं जो ग्रीक पढ़ने में असमर्थ हैं। फिर भी वे इस ग्रीक पर इतना अधिक आधारित हैं। जॉन वह स्थान है जहाँ लोग यह दिखाने के लिए जाते हैं कि यीशु मसीह ईश्वर हैं। वैसे, क्या आपको इस कोर्स में याद है, अगर हम मार्क 1:1 पर वापस गए, तो आपने मलाकी के उद्धरण को देखा कि मार्क 1:1 वास्तव में दिखाता है कि यीशु यहोवा ईश्वर हैं। तो यह एक और जगह है जहाँ आप इसके लिए जा सकते हैं। लेकिन, यूहन्ना ही वह स्थान है जहाँ यीशु को परमेश्वर के रूप में चित्रित किया गया है।

अब, मैं मूल रूप से बात करना चाहता हूँ, ईश्वर के व्यक्तित्व के बारे में इतना नहीं, हमारे यहाँ गॉर्डन कॉलेज में एक विशेषज्ञ हैं, डॉ. स्टीव हंट नाम के एक व्यक्ति, जिन्होंने जॉन की पुस्तक का अध्ययन करने में अपना पूरा जीवन बिताया है। वह जॉन की पुस्तक के वास्तविक विशेषज्ञ हैं और उन्हें यकीन नहीं है कि जॉन, उन्हें लगता है कि शायद लाजर या किसी और ने जॉन की पुस्तक लिखी है। मैं इससे असहमत हूँ, इसलिए हमारे पास एक बहस चल रही है, मुझे उनकी विशेषज्ञता के बारे में पता है, हालाँकि वह विशेषज्ञ हैं और मैं बस एक भौंकने वाले कुत्ते की तरह हूँ। लेकिन मैं जॉन के व्यक्तित्व के लिए कुछ तर्क देना चाहता हूँ, लेकिन मैं जॉन की पुस्तक की विशेषताओं को

प्रतिबिंबित करना चाहता हूँ और ये कुछ विशेषताएँ हैं। जॉन की पुस्तक की कुछ विशेषताएँ हैं, और क्या आपको पता है कि "जॉन के अनुसार" ये शीर्षक हैं, जो मूल पांडुलिपियों में नहीं हैं। हमारे पास ऐसा कुछ नहीं है जो कहता है कि जॉन ने इसे लिखा है। अब रहस्योद्घाटन की पुस्तक में, आप जानते हैं कि यह कहता है, "मैं, जॉन," आप जानते हैं कि यह दर्शन था। तो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यह स्पष्ट है और हम पूछते हैं कि वह कौन सा यूहन्ना है, क्या वह यूहन्ना बड़ा है, या वह यूहन्ना प्रेरित है? अधिकांश लोग सोचते हैं कि यह यूहन्ना प्रेरित है, लेकिन इस पर कुछ बहस है।

जे. जॉन का यहूदीपन: धार्मिक विश्वास और हनुक्का [28:09-32:08]

जिसने भी यह किताब लिखी है, जिसने भी यह किताब लिखी है वह बहुत यहूदी है। जिसने भी यह किताब लिखी है वह बहुत यहूदी है और मैं आपको इस किताब के यहूदीपन के कुछ उदाहरण देता हूँ।

सबसे पहले, यहूदी मान्यताओं की तुलना सामरियों से की जाती है। अध्याय 4 में, यीशु कुएँ पर महिला के पास जाता है और आप यहूदी यीशु को देखते हैं। यीशु कुएँ पर सामरी महिला से मिलने वाले यहूदी थे। अध्याय 4 पद 9 में सामरी महिला ने उनसे कहा, "तुम एक यहूदी हो और मैं एक सामरी महिला हूँ," उन दोनों को सामरी और महिला माना जाता है। "मैं एक सामरी महिला हूँ, तुम मुझसे पानी कैसे माँग सकते हो।" फिर कोष्ठक में लिखा है "[क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ नहीं मिलते]।" और इसलिए आपको यह छोटी सी टिप्पणी मिलती है, "क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ नहीं मिलते।" सामरी महिला कहती है, "हम इस पर्वत [ऊपर गेरिज़िम पर्वत पर] पर भगवान की पूजा करते हैं, आप यरूशलेम में पूजा करते हैं। आप कहते हैं कि यरूशलेम में मंदिर ही वह स्थान है, हम यहाँ गेरिज़िम पर पूजा करते हैं।" जॉन की पुस्तक के लेखक ने इसी यहूदी विचार को उठाया है। वह बहुत संवेदनशील है, हम यरूशलेम में पूजा करते हैं, आप लोग गेरिज़िम पर्वत पर पूजा करते हैं। इसलिए आपको ऐसी चीज़ें देखने को मिलती हैं जहाँ वह यहूदी रंगत अपनाता है।

पर्व, अब पर्व पर जाने से पहले मुझे वापस जाना चाहिए। मैं वापस जाना चाहता हूँ और हनुक्का के बारे में बात करना चाहता हूँ लेकिन ऐसा करने से पहले मैं पहले झोपड़ियों के पर्व के बारे में बात करना चाहता हूँ। अब, झोपड़ियों का पर्व तब होता है जब उन्हें बाहर जाना होता है और

एक सप्ताह के लिए झोपड़ियों में रहना होता है, और आमतौर पर सितंबर के महीने में पतझड़ में, और वे बाहर जाते हैं और उन्हें जंगल में भटकने की याद आती है जब वे 40 साल तक जंगल में भटकते रहे। तो जॉन की पुस्तक में, अब, यह होने जा रहा है - मैं इसे यहूदी दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ, अध्याय 7 श्लोक 2 और 37 और इसके बाद कहा गया है, "लेकिन जब यहूदी झोपड़ी का पर्व निकट था, तो यीशु के भाइयों ने उससे कहा, 'तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए और यहूदिया चले जाना चाहिए, ताकि तुम्हारे शिष्य तुम्हारे द्वारा किए जाने वाले चमत्कारों को देख सकें,'" और फिर यह कहता है, "'क्योंकि उसके अपने भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।" यीशु कुछ देर रुकते हैं और फिर वे यरूशलेम में झोपड़ियों के पर्व पर चले जाते हैं। जॉन की पुस्तक के लेखक जॉन ने झोपड़ियों के इस पर्व को उठाया। यीशु वहाँ जा रहे थे, उनके भाई कहते हैं कि आप यरूशलेम में कुछ चमत्कार क्यों नहीं करते और सबको दिखाते हैं कि आप वास्तव में कौन हैं? उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया।" इसलिए लेखक ने इसे झोपड़ियों के पर्व से उठाया।

फिर और भी स्पष्ट रूप से जॉन की पुस्तक हनुक्काह के इस पर्व का एकमात्र संदर्भ है। अध्याय 10 श्लोक 22 में यह कहा गया है, "फिर समर्पण का पर्व आया," जो मुझे लगता है कि किंग जेम्स में "रोशनी का पर्व" अनुवादित है, क्योंकि वे मोमबत्तियाँ जलाते हैं और हनुक्काह, यरूशलेम के समर्पण का पर्व, यह सर्दी का मौसम था। जब यह हनुक्काह आता है तब सर्दी थी। अगर मैं आपसे कहूँ हैप्पी हनुक्काह, हनुक्काह कब है? हनुक्काह हमारे क्रिसमस, हमारे क्रिसमस के उत्सव के ठीक बाद है, 25 दिसंबर। हनुक्काह आमतौर पर उससे कुछ दिन पहले होता है। तो हनुक्काह का पर्व यह एकमात्र पुस्तक है जिसमें हनुक्काह के पर्व, समर्पण के पर्व का उल्लेख है। यह एकमात्र सुसमाचार है जो इसे उठाता है। यह बहुत यहूदी है, हनुक्का का पर्व पुराने नियम में वर्णित नहीं है क्योंकि जैसा कि हमने मैकाबीन काल का अध्ययन करते समय देखा, हनुक्का का पर्व जूडस मैकाबीस द्वारा एंटीओकस एपिफेन्स से मंदिर की सफाई से निकला है। क्या आपको 165 ईसा पूर्व के आसपास का काल याद है और फिर मैकाबीस, जूडस मैकाबीस? और इसलिए हनुक्का का पर्व पुराने नियम में ज्ञात नहीं था और फिर भी यह बहुत यहूदी है क्योंकि मैकाबीस बहुत यहूदी हैं, जो एंटीओकस एपिफेन्स के विरोध में हैं।

के. जॉन का यहूदीपन: शादियाँ और अंत्येष्टि [32:08-36:58]

आप किसी संस्कृति के बारे में क्या बताते हैं? आपको वास्तव में संस्कृति कब देखने को मिलती है? क्या आप में से किसी ने "माई बिग फैट ग्रीक वेडिंग" फ़िल्म देखी है? शादियों में आप उनकी शादियों में संस्कृति के बारे में बहुत कुछ देखते हैं। इसलिए यदि आप यूनानियों के बारे में जानना चाहते हैं, तो आप इस "माई बिग फैट ग्रीक वेडिंग" में जाएँ, फ़िल्म देखें। यह अमेरिका में ग्रीक संस्कृति, आधुनिक ग्रीक संस्कृति पर एक जबरदस्त व्याख्या है। तो शादियाँ और अंतिम संस्कार, और इस पुस्तक में जॉन की पुस्तक में जो कुछ भी है जिसे हम अभी देख रहे हैं, आपको कैना का विवाह भोज मिला है। कैना के विवाह भोज में यीशु अपना पहला चमत्कार करते हैं, उनके पास शराब खत्म हो जाती है। यीशु की माँ आती है और कहती है, "अरे, उनके पास कोई शराब नहीं है, आप जानते हैं कि पार्टियाँ नीचे जा रही हैं। यीशु, क्या आप यहाँ कुछ करेंगे?" मेरे और आपके बीच क्या है, और यीशु कहते हैं, 'ये पत्थर के बर्तन लें और उन्हें पानी से भर दें।' इन चीजों में 160 गैलन पानी था, और यीशु पानी को शराब में बदल देते हैं। फिर वे उसमें से कुछ राज्यपाल या विवाह के पर्यवेक्षक के पास ले जाते हैं और वह कहता है, "यह पूरी रात में हमारी सबसे अच्छी शराब है। आम तौर पर लोग सबसे अच्छी शराब पहले देते हैं, और जब लोग अच्छी तरह से पी लेते हैं, तो वे सबसे खराब शराब देते हैं क्योंकि वे नहीं पी सकते, वे थोड़ा बाहर हो जाते हैं, लेकिन आपने अब तक की सबसे अच्छी शराब बचा कर रखी है।" वह यीशु था। तो आपको यह सब यहूदी विवाह सामग्री मिलती है, और जॉन ने जॉन की इस पुस्तक में इसे उठाया है।

लाजर का अंतिम संस्कार और मृत होना एक और जगह है जिस पर जॉन ने प्रकाश डाला है, यहूदी रीति-रिवाज और संस्कृति। तो आप बातें समझ गए होंगे। मैं अंतिम संस्कार लाजर में अध्याय 11 से पढ़ता हूँ, "लेकिन प्रभु, मरे हुए आदमी की बहन मार्था ने कहा।" क्योंकि हम यीशु को पत्थर हटाते हुए देखने जा रहे हैं, और मार्था यहाँ थोड़ा घबरा रही है। वह कहती है, "इस बार वहाँ एक बुरी गंध है। वह चार दिनों से वहाँ है यीशु।" और ये लोग जानते थे कि वे आज के अमेरिका की तुलना में मृत लोगों के आसपास अधिक थे, जहाँ शव को ले जाने वाला व्यक्ति शव को लेता है, और उसे एक ताबूत में रखता है, और जमीन में गाड़ देता है। हम मृत्यु और मरने की पूरी प्रक्रिया के

आदी नहीं हैं। उस समय, वे वहाँ थे और इसलिए उसने कहा, "वह चार दिनों से कब्र में है, यह पत्थर हटाने का अच्छा समय नहीं होगा। वहाँ एक बुरी गंध होगी क्योंकि वह चार दिनों से वहाँ है।" तब यीशु ने कहा, 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगे तो परमेश्वर की महिमा को देखोगे।' इसलिए उन्होंने पत्थर को हटा दिया और जब उसने यह कहा, तो उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा, 'लाज़र निकल आ।' मरा हुआ आदमी बाहर आ गया, और फिर यह विवरण दिया गया है :
 “ मरा हुआ आदमी बाहर आ गया। उसके हाथ और पैर सनी के कपड़े की पट्टियों से लिपटे हुए थे।”

तो आपको यहूदी लोगों के बारे में यह छोटी सी जानकारी मिलती है। यहूदी लोग लोगों को कैसे दफनाते हैं। अब यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है क्योंकि एक यहूदी व्यक्ति को साफ और अशुद्ध के बारे में चिंता करनी पड़ती है। मृत व्यक्ति अशुद्ध है। इसलिए जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को दफनाता है तो आपको यहूदी पृष्ठभूमि को देखते हुए साफ और अशुद्ध के बारे में सावधान रहना चाहिए। इसलिए उसके हाथ और पैर लिनन की पट्टियों से लिपटे हुए हैं, और उसके चेहरे के चारों ओर कपड़ा है। एक *सूदरियम*, जो बहुत दिलचस्प है। लाजर के चेहरे के चारों ओर एक कपड़ा है। यह कपड़ा उसके चेहरे को ढक रहा था। इस पुस्तक में जॉन, अध्याय 11 श्लोक 44, मृत व्यक्ति के ऊपर इस चेहरे के कपड़े के बारे में बताता है। उसके हाथ और पैर लिनन के कपड़े में लिपटे हुए हैं। लेकिन उसके चेहरे के चारों ओर यह कपड़ा और *सूदरियम* जैसी चीजें हैं, लेकिन यह बहुत दिलचस्प है।

जब अध्याय 20 में जीसस, और वास्तव में डॉ. हंट ने इसे मुझसे कहीं बेहतर तरीके से विकसित किया है। अध्याय 20 श्लोक 7 में, जीसस अब मर चुके हैं और क्या होता है, वे उन पर आते हैं और उन्हें पिज्जा पाई की तरह बनाते हैं। वे उन पर ये सभी मसाले डालते हैं और वे उन्हें कब्र में डालने जा रहे हैं। और इसलिए वे उन्हें मसाले देते हैं। और फिर क्या होता है, वे एक *सूडेरियम* डालते हैं, यह सटीक शब्द, जो शास्त्र में एक अत्यंत दुर्लभ शब्द है, यह *सूडेरियम* जीसस के ऊपर जाता है। तो, यह लाजर के साथ हुआ था, आपको चेहरे के कपड़े का यह विवरण मिलता है और जीसस के साथ। जब जीसस मृतकों में से उठते हैं, तो इस *सूडेरियम* कोकिनारे रख दिया जाता है। वहाँ विशेष उल्लेख है कि आप जानते हैं कि लिनन यहाँ थे और *सूडेरियम* वहाँ था। और

इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह लेखक उस यहूदी सांस्कृतिक रिवाज को उठाता है। और इसलिए लेखक यहूदी दृष्टिकोण से यहूदी शादियों और अंतिम संस्कारों का वर्णन करने में अच्छा है। तो फिर से यह पुस्तक की यहूदीता को दर्शाता है।

एम. जॉन का यहूदीपन: मंदिर की सफाई और मन्ना [36:58-39:09]

मंदिर की सफाई के दौरान यीशु ने कबूतरों को पलटा, बाहर निकाला और उनकी देखभाल की और फिर मंदिर में अपने शरीर के मंदिर के बारे में कहा, "मैं इस मंदिर को नष्ट कर दूंगा और तीन दिन में इसे फिर से खड़ा कर दूंगा।" पुस्तक यरूशलेम पर केंद्रित है। मन्ना, "मैं जीवन की रोटी हूँ।" और इसलिए आपको स्वर्ग से मन्ना के उतरने की बात मिलती है, और फिर यीशु ने समझाया कि वह जीवन की रोटी है।

यहाँ एक वाक्य है, "मेरे शब्द आत्मा हैं और मेरे शब्द जीवन हैं।" मुझे याद है जब मैं एक युवा व्यक्ति था, मैं बहुत सारे उदार धर्मशास्त्र और राजनीति पढ़ रहा था और मैं वास्तव में भगवान के बारे में पढ़ने में डूबा हुआ था, लेकिन बाइबल से इसका कोई लेना-देना नहीं था। और भगवान को देखने के ये सभी अद्भुत दार्शनिक तरीके जो बौद्धिक रूप से बहुत संतोषजनक थे, लेकिन खुद शास्त्र से बहुत दूर थे। मैं एक गर्मियों में घर गया क्योंकि मैं इससे जूझ रहा था, और मुझे एहसास नहीं हुआ कि बाइबल मुझसे और दूर होती जा रही थी। मैं इसे और अधिक आमंत्रित कर रहा था, नए दृष्टिकोण और भगवान और यीशु के बारे में सोचने के अधिक दार्शनिक तरीके। मैं पॉल हाउसर नाम के एक व्यक्ति से मिला, जो ग्रैंड आइलैंड हाई स्कूल नामक जगह पर पढ़ाता था और यह आदमी एक बहुत अच्छा शिक्षक था। वह ग्रैंड आइलैंड हाई स्कूल में हाई स्कूल के बच्चों को प्लेटो और अरस्तू पढ़ा रहा था। वह एक अविश्वसनीय शिक्षक था जिसने बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया, सभी सबसे होशियार और सबसे अच्छे बच्चे जो ग्रैंड आइलैंड हाई स्कूल से आए थे। पॉल हाउसर की कक्षा ने उनके अंदर आग लगा दी। लेकिन वह एक ईसाई भी था और जब मैं इस उदार धर्मशास्त्र को पढ़ने के बाद वापस आया, तो उसने मुझे यह श्लोक सुनाया, कि यीशु ने कहा, "मेरे शब्द आत्मा हैं, और मेरे शब्द जीवन हैं।" इसलिए यीशु के शब्दों पर ध्यान केंद्रित करो, टेड। मुझे यही करना था, यीशु के शब्दों पर ध्यान केंद्रित करना था। इसलिए पॉल हाउसर ने मुझे फिर से

रास्ते पर ला दिया, और यह हमारे विचार-विमर्श में मेरे लिए एक वास्तविक मोड़ था। यह जॉन की पुस्तक से आता है, "मेरे शब्द आत्मा हैं, और मेरे शब्द जीवन हैं।"

एन. फिलिस्तीनी प्रभाव: फिलिस्तीन की स्थलाकृतिक जागरूकता [39:09-42:17]

ई: संयुक्त एनआर; 39:09-52:29; फिलिस्तीनी और प्रत्यक्षदर्शी संकेतक

अब, जॉन का व्यक्तित्व, और फिर से मैं उस व्यक्ति पर इतना ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहता, जिसने भी पुस्तक लिखी है, लेकिन इसे खोलने के लिए कहें कि जिसने भी यह पुस्तक लिखी है, मुझे लगता है कि यह जॉन है, डॉ. हंट को लगता है कि यह लाजर या कोई और है और इसी तरह की अन्य चीजें हैं। लेकिन जिसने भी यह पुस्तक लिखी है, यहाँ फिलिस्तीनी प्रभाव था। फिलिस्तीन के बारे में एक स्थलाकृतिक जागरूकता है। अगर मैं आपको ग्रैंड आइलैंड में बेसलाइन रोड के बारे में बताऊँ, तो मैं ग्रैंड आइलैंड में बड़ा हुआ हूँ जो मेरा घर है और इसलिए मैं वैलेस ड्राइव और लव रोड और बेसलाइन रोड और रैनसम रोड जैसी चीजों को जानता हूँ। ये सभी सड़कें हैं जिन पर मैंने एक बच्चे के रूप में यात्रा की है और इसलिए आप स्वाभाविक रूप से उनका उल्लेख करते हैं। और ऐसा ही जॉन में भी है। यदि आप फिलिस्तीन से हैं, तो आप इन जगहों को जानते होंगे क्योंकि आप इन जगहों पर पैदल गए हैं। और इसलिए आपके पास जो कुछ है वह इस तरह के बयान हैं जो एक गहरी स्थलाकृतिक जागरूकता दिखाते हैं। तो अध्याय 1 श्लोक 28 में कहा गया है, "यह सब जॉर्डन के दूसरी तरफ बेथानी में हुआ, जहाँ जॉन बपतिस्मा दे रहा था।" उसने ऐसा क्यों कहा? कम से कम दो बेथानी हैं। जैतून के पहाड़ पर एक है जिसे आप लोगों को याद होगा जब आप यरूशलेम में खो जाओ कार्यक्रम में गए थे, जब हम पैटर नोस्टर या हमारे पिता के पास गए थे जहाँ प्रभु की प्रार्थना की इन सभी भाषाओं के साथ एक चैपल है। यह जैतून के पहाड़ के ठीक पीछे पूर्वी तरफ है, बस उसके बहुत करीब बेथानी शहर है। बेथानी जैतून के पहाड़ के पीछे की तरफ था और जब आप बेथानी के ऊपर आते हैं और फिर जैतून के पहाड़ के ऊपर और फिर मंदिर के पहाड़ के ठीक नीचे आते हैं। आप लोगों ने देखा होगा कि जैतून के पहाड़ की चोटी से आपको किद्रोन घाटी के पार मंदिर के पहाड़ के क्षेत्र का एक सुंदर दृश्य दिखाई देता है। तो यह यरूशलेम के बहुत करीब था, बस रेगिस्तान में रिज के ऊपर, लेकिन बेथानी शहर। यरूशलेम के

पास ही एक नगर था जिसका नाम बैतनिय्याह था।

तो जिसने भी यह किताब लिखी है, वह कह रहा है, "जब मैं बेथनी कहता हूँ तो मेरा मतलब बेथनी नहीं होता।" आप क्या सोचेंगे? यह वही बात है और अगर मैंने वारसॉ कहा, अगर मैंने आपसे वारसॉ कहा। यह बोस्टन के उत्तरी तट पर बोस्टन के बाहर वेनहम में गॉर्डन कॉलेज में है। अगर मैंने कहा, बोस्टन के उत्तरी तट पर अगर मैंने वारसॉ कहा, तो इस कमरे में लगभग हर कोई जब मैं वारसॉ कहता हूँ तो आपके दिमाग में अगला शब्द क्या होगा? आप वारसॉ, पोलैंड के बारे में सोचते हैं। मेरा मतलब है कि वारसॉ पोलैंड की राजधानी है या कुछ और। लेकिन वास्तव में मैं वारसॉ, पोलैंड के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। मैं वारसॉ, इंडियाना के बारे में बात कर रहा हूँ, जहाँ मैंने वारसॉ क्षेत्र में विनोना लेक, इंडियाना नामक स्थान पर 20 वर्षों तक पढ़ाया। तो, मेरा मतलब वारसॉ, इंडियाना था। लेकिन अगर मैं वारसॉ कहने जा रहा हूँ, तो मुझे यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि यह वारसॉ, इंडियाना है ताकि आप जान सकें कि यह वारसॉ, पोलैंड नहीं है। तो यहाँ पर मौजूद व्यक्ति को पता है कि यहाँ दो बेथनी हैं और उसे उन्हें बताना है, "बेथनी जॉर्डन के दूसरी ओर है," पूर्व में, 20, 30, या 40 मील दूर।

O. फिलिस्तीनी प्रभाव: बेथेस्डा और मंदिर [42:17-45:20]

तो, जिसने भी इस पुस्तक को एक गहरी स्थलाकृतिक जागरूकता के रूप में लिखा है। यहाँ एक और उदाहरण है, और यह जॉन अध्याय 5 पद 2 में है, क्या आपको याद है कि एक लंगड़ा आदमी था जो एक तालाब के किनारे लेटा हुआ था। जब भी पानी हिलता था तो जो भी पहले पानी में जाता था भगवान उसे ठीक कर देते थे। खैर, यह आदमी लगभग 38 वर्षों से वहाँ था और पानी में नहीं जा पाया था। वह अपंग था और अंदर नहीं जा सकता था। अध्याय 5 पद 2 में कहा गया है, "अब यरूशलेम में भेड़ गेट के पास है।" तो सबसे पहले, क्या हम जानते हैं कि भेड़ गेट कहाँ है? विडंबना यह है कि आज भेड़ गेट को शेर का गेट कहा जाता है। इसलिए यदि आप गेट लॉस्ट जेरूसलम प्रोग्राम पर जाते हैं तो आप शेर के गेट पर जाते हैं जो वास्तव में भेड़ गेट है, यहीं से वे भेड़ों को अंदर लाते थे। वे इसे भेड़ गेट क्यों कहते हैं इसका कारण यह है कि वे भेड़ों को बलि के लिए मंदिर में ले जाने के लिए यहीं से लाते थे। तो भेड़ द्वार के पास एक तालाब था, "जिसे अरामी

भाषा में बेथेस्टा कहा जाता है, जो पाँच ढके हुए स्तंभों से घिरा हुआ है।" पाँच ढके हुए स्तंभों से। तो आपको बेथेस्टा का तालाब मिला है जिसमें यह पानी है और ये पाँच ढके हुए स्तंभ हैं। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने वास्तव में बेथेस्टा का यह तालाब पाया है, उन्होंने वास्तव में इसे सेंट ऐनी चर्च में पाया है। यदि आप लायन गेट से गुजरते हैं और लगभग पचास गज की दूरी पर दाईं ओर मुड़ते हैं, तो आप सेंट ऐनी चर्च में हैं और यहीं बेथेस्टा का तालाब है। उन्होंने वे पाँच ढके हुए स्तंभ पाए हैं। तो, ठीक वही जो उन्होंने यहाँ वर्णित किया है, वे वास्तव में पुरातात्विक रूप से इस सामान को खोजने में सक्षम हैं। यह बस एक दिलचस्प पुष्टि है जो छोटी-छोटी बातों से भरी हुई है, आप जानते हैं लेकिन अचानक आपको एहसास होता है, हमने यहाँ ये पाँच रंगीन स्तंभ पाए हैं। स्तंभों के आधार अभी भी यहाँ हैं। तो यह बेथेस्टा में है, फिर से बहुत विस्तृत विवरण। यह ऐसा होगा जैसे मैं वैलेस ड्राइव का वर्णन करूँ जहाँ मैं बड़ा हुआ हूँ, मैं उसका बहुत विस्तार से वर्णन करूँगा क्योंकि वह मेरा घर है, जहाँ मैं बड़ा हुआ हूँ।

अध्याय 2 में यीशु ने टेबल पलट दी और कहा, "इस मंदिर को नष्ट कर दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।" और फिर लोग कहते हैं, "एक मिनट रुको। इस मंदिर को बनाने में हेरोदेस को 46 साल लगे।" यह जानते हुए कि इस मंदिर को बनाने में 46 साल लगे थे, यह कुछ ऐसा है जो एक फिलिस्तीनी जानता होगा, जो कोई भी वहाँ रहता है वह जानता होगा। यह कुछ ऐसा है जैसे कि आप बोस्टन में हैं, और मैंने आपको बिग डिग कहा, और बोस्टन में बिग डिग वास्तव में चला गया, अब मुझे नहीं पता कि कोई भी जानता हो, बिग डिग हमेशा के लिए चला गया। यह 1 बिलियन डॉलर से शुरू हुआ और 15 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया, बस बढ़ता रहा, बढ़ता रहा, बढ़ता रहा, बढ़ता रहा और बढ़ता रहा। ठीक वैसे ही जैसे ये सभी लोग बिग डिग नामक इस परियोजना का फायदा उठाने की कोशिश कर रहे थे। इसमें एक तरह का दोहरा अर्थ है, बोस्टन क्षेत्र के लिए बिग डिग कर के हिसाब से। लेकिन वैसे भी, 46 साल से यह मंदिर बन रहा था, और वे यह जानते थे और फिर से, यह एक फिलिस्तीनी तरह का ढांचा दिखाता है।

पी. प्रत्यक्षदर्शी विवरण: "हम" का उपयोग और माल्चस का कान [45:20-47:32]

अब, यह प्रत्यक्षदर्शी की निशानी है, इसलिए जिसने भी इस पुस्तक को लिखा है वह यहूदी था, जिस तरह से वे पर्व का वर्णन करते हैं। जिसने भी इस पुस्तक का वर्णन किया है वह न केवल यहूदी है, बल्कि फिलिस्तीनी भी है, जो यरूशलेम के बारे में बहुत-बहुत जानता है; स्थलाकृति के बारे में बहुत-बहुत जानता है और दो बेथानी और चीजें कहाँ हैं, यह जानता है। इसके अलावा, जिसने भी पुस्तक लिखी है वह प्रत्यक्षदर्शी भी था। और इसलिए आपको जॉन अध्याय 1 श्लोक 14 में यह स्पष्ट कथन मिलता है, "हमने उसकी महिमा देखी।" "हम" में लेखक शामिल है, दूसरे शब्दों में वह व्यक्ति कह रहा है, "मैंने यह देखा।"

अब वैसे, क्या हम जानते हैं कि लूका ने यह नहीं देखा? और लूका कहता है, "मैंने प्रत्यक्षदर्शियों से बात की।" लूका ने यह नहीं कहा, "मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ।" लूका कहता है, "मैंने प्रत्यक्षदर्शियों से बातचीत की, कई अन्य विवरण हैं। मैंने उन्हें ध्यान में रखा," लूका की पुस्तक से।

यह लेखक, जो भी यहाँ यूहन्ना में लिख रहा है, कह रहा है, "हमने उसकी महिमा देखी।" मैंने इसे देखा; मैं एक प्रत्यक्षदर्शी हूँ। आपके पास इस तरह के छोटे-छोटे विवरण हैं जो आपको बताते हैं कि यह लेखक वास्तव में एक प्रत्यक्षदर्शी था। तो क्या होता है कि वे गेथसेमेन के बगीचे में हैं। यीशु एक बार प्रार्थना करने के लिए बाहर जा रहे हैं, और फिर वे वापस आते हैं और शिष्य सो रहे होते हैं और वे बाहर जाते हैं और फिर से प्रार्थना करते हैं, और वापस आते हैं। अंत में, वे उन्हें सोने देते हैं और यीशु तीसरी बार बाहर जाते हैं। फिर यहूदा भीड़ के साथ आता है और पतरस अपनी तलवार निकालता है और पतरस मर्दाना नाटक करता है। वह अपनी तलवार निकालता है और उस आदमी का कान काट देता है। खैर, अब दूसरे लेखक हमें बताते हैं, हाँ, पतरस ने उस आदमी का कान काट दिया। लेकिन इस सुसमाचार के लेखक ने हमें बताया कि इस आदमी का नाम मलखुस था। हमें वास्तव में उस आदमी का नाम पता है जिसका कान काटा गया था। फिर यीशु मलखुस के सिर पर कान वापस लगाते हैं और उसे ठीक करते हैं। यीशु कहते हैं, "पीटर अपनी तलवार रख ले, जो तलवार से जीते हैं, वे तलवार से मरते हैं।" तलवारें अभी ठीक नहीं हैं, और यहाँ आपका कान वापस है और वह इसे मलखुस के सिर पर रखता है। उस आदमी का नाम मलखुस था, यह एक प्रत्यक्षदर्शी का संकेत है। दूसरे शब्दों में, वह वहाँ था और उसने देखा कि वह

कौन था और उस व्यक्ति का नाम जानता था। यह यहाँ बिल्कुल अविश्वसनीय है। मल्चस का नाम सूचीबद्ध है जो एक प्रत्यक्षदर्शी लेखक का संकेत है।

प्र. प्रत्यक्षदर्शी विवरण: 153 मछली और सटीक समय [47:32-49:48]

इससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है मछली। मुझे नहीं पता कि आप में से किसी को यह याद होगा या नहीं। जब मैं बड़ा हो रहा था, तब गृहयुद्ध के दौरान एक फ़िल्म हुआ करती थी, जिसका नाम था, "रेन मैन"। इस आदमी को दिमाग़ की समस्या थी, लेकिन फिर उन्होंने, मुझे याद नहीं क्या, टूथपिक्स गिरा दिए। उन्होंने बहुत सारे टूथपिक्स गिराए और उन्होंने नीचे देखा और वह आदमी आपको बता सकता था कि ज़मीन पर कितनी टूथपिक्स हैं।

यीशु को मृतकों में से जीवित किया जाता है। पतरस और प्रिय शिष्य नाव में बाहर हैं। क्या होता है? किनारे पर खड़ा आदमी पूछता है, "अरे, क्या तुमने कुछ पकड़ा है?" और वह आदमी कहता है, "नहीं, हम पूरी रात बाहर रहे हैं और हमने कुछ भी नहीं पकड़ा है।" और वह कहता है, "अपना जाल दूसरी तरफ़ फेंको।" लोग अपने जाल दूसरी तरफ़ फेंकते हैं और अचानक उन्हें बहुत सारी मछलियाँ मिल जाती हैं। पतरस निष्कर्ष निकालता है, यह यीशु ही होगा क्योंकि यीशु ने पहले भी ऐसा किया है। इसलिए पतरस गोता लगाता है और किनारे पर तैरता है, जबकि दूसरा आदमी ज़्यादा ज़िम्मेदार होने के कारण मछलियों को खींचता है। फिर यह कहा जाता है कि जिन मछलियों को गिना गया था, यह जॉन 21 में है, यह पुनरुत्थान के बाद है। वह आदमी कहता है कि वहाँ 153 मछलियाँ थीं। क्या हम जुनूनी बाध्यकारी बात कर रहे हैं या हम यहाँ क्या बात कर रहे हैं? कौन मछलियों की सही संख्या गिनेगा? कौन ऐसा करेगा? मेरा मतलब है, मेरे जैसे ज़्यादातर लोग, हमने सौ मछलियाँ पकड़ीं, हमने सैकड़ों मछलियाँ पकड़ीं; हमने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं। आप कुछ ऐसा ही कहेंगे। यही कारण है कि मैं कहूँगा कि जॉन ने किताब लिखी है, जॉन एक मछुआरा है। इसलिए वह व्यक्ति यह जानना महत्वपूर्ण है कि आपने कितनी मछलियाँ पकड़ी हैं। और इसलिए मछुआरा गिनती करता है, और वह 153 कहता है; यह एक प्रत्यक्षदर्शी की निशानी है। कोई भी इस तरह का विवरण याद नहीं रख सकता, यह व्यक्ति एक प्रत्यक्षदर्शी है, और इसलिए आपको ये 153 मछलियाँ मिलती हैं।

यह लेखक, चाहे वह कोई भी हो, यीशु के वर्णन के दौरान हमें कई बार सटीक समय बताता है। वह हमें बताएगा कि यह तीसरा घंटा था, यह छठा घंटा था, यह नौवां घंटा था। वैसे, वे अपना दिन सूरज उगने के साथ ही शुरू करते हैं, जब सूरज निकलता है, तो आप जानते हैं, तीसरा घंटा नौ बजे जैसा होगा, छठा घंटा दोपहर जैसा होगा, इस तरह की बातें। तो सटीक समय सूचीबद्ध है, फिर से यह एक प्रत्यक्षदर्शी का चिह्न है।

आर. प्रत्यक्षदर्शी पुष्टि [49:48-52:29]

अब, यहाँ एक ऐसा है जो दिलचस्प है, ये स्पष्ट कथन हैं और मैं इनमें से कुछ को पढ़ना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि ये वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। ये स्पष्ट कथन हैं जहाँ यह पुष्टि होती है कि यह व्यक्ति प्रत्यक्षदर्शी था। अध्याय 19, पद 35 से शुरू करते हुए, "जिस व्यक्ति ने इसे देखा है उसने गवाही दी है और उसकी गवाही सच्ची है।" ध्यान दें कि वह तीसरे व्यक्ति में अपने बारे में बात कर रहा है। वह इस व्यक्ति के बारे में बात करते हुए मैं नहीं कहता: "जिस व्यक्ति ने इसे देखा है उसने गवाही दी है और उसकी गवाही सच्ची है।" वह जानता है कि वह सच कहता है और वह गवाही देता है ताकि आप विश्वास कर सकें। यूहन्ना की पुस्तक का उद्देश्य यह है कि आप विश्वास कर सकें। उसकी कोई भी हड्डी नहीं टूटी। यह आदमी यह जानता है क्योंकि वह वहाँ था और उसने देखा कि क्रूस पर मसीह की कोई भी हड्डी नहीं टूटी। मैं जानता हूँ कि, मैं वहाँ था। यह आदमी जो अब आपको लिख रहा है जानता है कि यह सच है क्योंकि उसने देखा कि मसीह की कोई भी हड्डी नहीं टूटी; अध्याय 19 पद 35।

यह भी एक दिलचस्प बात है: अध्याय 21 पद 24. "यह वही शिष्य है जो इन बातों की गवाही देता है। जब पतरस ने उसे देखा तो उसने पूछा, 'प्रभु, उसके बारे में क्या?' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे लौटने तक जीवित रहे, तो तुम्हें इससे क्या? तुम्हें मेरे पीछे आना चाहिए।' इस वजह से, भाइयों के बीच यह अफवाह फैल गई कि यह शिष्य [अपना नाम नहीं बताता] लेकिन यह शिष्य नहीं मरेगा। लेकिन यीशु ने यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा, उसने केवल इतना कहा, 'यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे लौटने तक जीवित रहे, तो तुम्हें इससे क्या?' यह वही शिष्य है जो इन बातों की गवाही देता है।" तो वह तीसरे व्यक्ति में खुद को संदर्भित कर रहा है; उसने अपना नाम वहाँ नहीं

डाला। वह कहता है, "मैं वही हूँ जिससे यीशु ने यह कहा।" पतरस कहता है, "इस शिष्य के बारे में क्या।" वैसे क्या पतरस और यूहन्ना बहुत करीबी थे? पतरस, याकूब और यूहन्ना रूपांतरण के समय थे। वे तीनों करीबी थे। वैसे, याकूब के साथ क्या हुआ? याकूब को चर्च में जल्दी ही मार दिया गया, याकूब बहुत जल्दी ही घटनास्थल से चला गया। वह पहले शहीदों में से एक है, जेम्स। हाँ, स्टीफन पहले था, लेकिन जेम्स बहुत पहले शहीद हो गया था। इसलिए पीटर और जॉन एक दूसरे से तंग हैं। पीटर और जॉन एक दूसरे से तंग हैं और कहते हैं, "इस आदमी के बारे में क्या?" और उसे बताया गया था कि वह हमेशा जीवित रहेगा। लेकिन उसने कहा, "नहीं, नहीं, यीशु ने कहा, 'अगर मैं चाहता हूँ कि वह जीवित रहे।'" यह ल्यूक की पुस्तक के बिल्कुल विपरीत है। ल्यूक कहता है, "नहीं, नहीं, मैं प्रत्यक्षदर्शी नहीं हूँ, हालाँकि मैं प्रत्यक्षदर्शियों से जाँच कर रहा हूँ। और इसलिए यह यहाँ बहुत महत्वपूर्ण है।

एस. मसीह के प्रति विशेष निकटता [52:29-54:57]

एफ: संयुक्त एसवी; 52:29-64:15; मसीह और पतरस के प्रति निकटता

जिसने भी इसे लिखा है वह मसीह के बहुत करीब है। आपको यह विशेष निकटता मिलती है। पुस्तक में यूहन्ना का नाम नहीं है। पुस्तक पतरस द्वारा नहीं लिखी जा सकती क्योंकि पतरस इस शिष्य से बात करता है। इसलिए जिन शिष्यों का नाम है, और वह एंड्रयू होगा, थॉमस का नाम है, पतरस का नाम है, इसलिए वे पुस्तक के लेखक नहीं हो सकते। वास्तव में लाज़र का भी नाम है, यह दिलचस्प है, लेकिन पुस्तक के लेखक ने खुद को कैसे नामित किया है? उसका आत्म-पदनाम क्या है? वह खुद को क्या कहता है? यूहन्ना अध्याय 21 पद 20 और उसके बाद, यहाँ बताया गया है कि पुस्तक के लेखक ने खुद को कैसे पहचाना। वह कहता है, "पतरस ने मुड़कर उस शिष्य को देखा जिसे यीशु प्रेम करता था।" वह शिष्य जिसे यीशु प्रेम करता था, उनके पीछे चल रहा था, और जब पतरस ने उसे देखा तो उसने प्रभु से पूछा, 'उसके बारे में क्या?' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैं चाहता हूँ कि वह मेरे लौटने तक जीवित रहे, तो तुम्हें इससे क्या?' तो पतरस और यीशु के बीच इस चर्चा में "तुम्हें इससे क्या" का यह अंश इस शिष्य के बारे में है। यह शिष्य खुद को "वह शिष्य जिससे यीशु प्रेम करता था" के रूप में पहचानता है। यह खुद को पहचानने का एक जबरदस्त तरीका है। वह

खुद को अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं पहचानता। वह अपने रिश्तों से खुद को पहचानता है। यीशु मुझसे प्रेम करता है।

मुझे याद है कि एक बार उन्होंने महान रूढ़िवादी धर्मशास्त्री कार्ल बार्ट से पूछा था कि आपने अब तक जो सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है, वह क्या है? उन्होंने रोमनों पर हजारों-हजारों पत्रों की किताबें लिखी हैं, और उन्होंने कहा, "हाँ, यीशु मुझसे प्यार करते हैं।" मैं पुष्टि करता हूँ कि मेरे जीवनकाल में यह मेरे द्वारा सीखी गई सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक है। मैंने इसे अलग-अलग चरणों में अलग-अलग तरीकों से सीखा है, और जीवन के विभिन्न चरणों में आप इसे एक बच्चे के रूप में गाते हैं, हाँ यीशु मुझसे प्यार करते हैं। आप इसे किशोरावस्था से गुजरते हुए और किशोरावस्था के संघर्षों से गुजरते हुए नए रूप में सीखते हैं। आप सीखते हैं, हाँ यीशु मुझसे प्यार करते हैं, जब आप मध्य आयु में पहुँचते हैं और आप अपने जीवन में पहली बार यह देखना शुरू करते हैं कि मृत्यु आपके लिए एक विकल्प है। और जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, "हाँ, यीशु मुझसे प्यार करते हैं," आप इसे जीवन की सबसे अविश्वसनीय चीजों में से एक के रूप में सराहते हैं। तो चलिए मैं यहीं से शुरू करता हूँ, और हम इस अविश्वसनीय कथन पर वापस आते हैं।

टी. पीटर के साथ विशेष निकटता: मछली पकड़ना और पदयात्रा [54:57-57:58]

पतरस और शिष्य, उसके हमेशा जीवित रहने के बारे में एक सवाल है, हमने इस बारे में बात की है। अब पतरस और शिष्य मछली पकड़ने जाते हैं और यह दिलचस्प है। अध्याय 21 पद 7, "फिर वह शिष्य जिसे यीशु ने प्रेम किया," इस तरह से वह खुद को पहचानता है। "वह शिष्य जिसे यीशु ने प्रेम किया," पतरस से कहा, 'यह प्रभु है।'" जैसे ही शमौन पतरस ने उसे यह कहते सुना, 'यह प्रभु है,' उसने अपना बाहरी वस्त्र अपने चारों ओर लपेट लिया, क्योंकि उसने इसे उतार दिया था, और पानी में कूद गया। अन्य शिष्य मछलियों से भरे जाल को नाव में खींचकर उसके पीछे चले गए।" कितनी मछलियाँ? 153. तो यह आदमी एक मछुआरा है। वह जो भी है, वह गलील की झील पर पीटर के साथ नाव में मछली पकड़ रहा है। गलील की झील पर कौन मछुआरा है जो 153 मछलियाँ जानता है? मैं आपको सुझाव दूंगा कि प्रेरित यूहन्ना लाजर से बेहतर फिट बैठता है जो रेगिस्तान में बेथनी से एक भूमि-बंद व्यक्ति है, बस वहाँ जैतून के पहाड़ के पीछे की तरफ। जबकि,

जॉन एक मछुआरा है, इसलिए वह पीटर के साथ बाहर है। हमने पीटर, जेम्स और जॉन के बीच संबंध

देखा है। अब, यह भी महान लोगों में से एक है, अध्याय 20 पद 2 में, आपको यहाँ एक दिलचस्प कहानी मिलती है। मुझे देखने दो कि क्या मुझे यह मेरे नोट्स में मिला है, मुझे इसे पवित्रशास्त्र से ही पढ़ने दो, यूहन्ना अध्याय 20 पद 2 में, लेखक इस कहानी को उठाता है। "तो सप्ताह के पहले दिन, जब अभी भी अंधेरा था, मरियम मगदलीनी कब्र पर गई और देखा कि प्रवेश द्वार से पत्थर हटा दिया गया था। वह दूसरे शिष्य शमौन पतरस के पास दौड़ी।" दूसरा शिष्य, जिसे यीशु प्यार करता था और दूसरा शिष्य, जिसे यीशु प्यार करता था, खुद की पहचान कर रहा था, और कहा, "वे प्रभु को कब्र से निकाल ले गए हैं और हम नहीं जानते कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।" तो, पतरस और दूसरा शिष्य, वह शिष्य जिससे यीशु प्यार करता था, कब्र की ओर चल पड़ा। दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शिष्य पतरस से आगे निकल गया और कब्र पर पहले पहुँच गया।" तो आपको यह आदमी पतरस के बीच पैदल दौड़ में मिला। आदमी कहता है, "अरे, मैंने उसे हरा दिया, मैंने पतरस को हरा दिया। उसे तुम्हें कुछ और बताने मत देना। मैंने उसे हरा दिया। मैं वहाँ सबसे पहले पहुँचा। मैंने उसे हरा दिया। मैं उससे ज़्यादा तेज़ दौड़ा, मैं वहाँ पहले पहुँचा।" और इसलिए आपने उसे इस पर आगे बढ़ते हुए पाया और "वह झुका और देखा कि वहाँ सनी के कपड़े पड़े हुए थे, लेकिन अंदर नहीं गया। और शमौन पतरस जो उसके पीछे था, कब्र में गया और वहाँ सनी के कपड़े पड़े हुए देखे, साथ ही दफन कपड़ा जो एक सूडेरियम है, दफन कपड़ा जो यीशु के सिर के चारों ओर था, कपड़ा खुद से मुड़ा हुआ था।" अंत में, दूसरा शिष्य, वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता था, कब्र पर सबसे पहले पहुँच गया। ध्यान दें कि उसने कहा कि मैं वहाँ पहले पहुँचा, साथ ही वह अंदर गया "और उसने देखा और विश्वास किया। वे अभी भी पवित्रशास्त्र को नहीं समझ पाए थे कि यीशु को मृतकों में से जीवित करना था।" और इसलिए यह वहाँ दूसरा शिष्य है।

यू. मसीह से निकटता: अंतिम भोज और गतसमनी [57:58-61:11]

यीशु के साथ भोजन करते समय, क्या आपको अंतिम भोज याद है? यह दुनिया की कुछ बेहतरीन पेंटिंग्स में है, अंतिम भोज। पतरस यीशु से दूर बैठा है। इसलिए उसने इस शिष्य से पूछा

जिसे यीशु प्यार करते थे, यीशु ने कहा कि तुम लोगों में से एक मुझे धोखा देने वाला है और पतरस पूछ रहा है, "वह कौन है?" और इसलिए वह कहता है, "अरे, यीशु से पूछो कि वह कौन है?" वैसे, क्या पतरस आमतौर पर शर्मीला होता है? अब पतरस आमतौर पर शर्मीला नहीं होता है, लेकिन इस बिंदु पर वह उस शिष्य के पास जाता है जिसे यीशु प्यार करता था, और वह कहता है, "अरे, तुम यीशु से पूछो कि उसे धोखा देने वाला कौन है।" तो आपको यह शिष्य मिलता है जो पतरस की तुलना में यीशु के अधिक करीब लगता है। पतरस यीशु तक पहुँचने के लिए इस शिष्य के माध्यम से जाता है। मैं आपको जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि ये तीन, पतरस, याकूब और यूहन्ना तीन बड़े शिष्य थे। रूपांतरण के समय, वहाँ कौन-कौन शिष्य थे? पतरस, याकूब और यूहन्ना। याकूब और यूहन्ना ज़ेबेदी के पुत्र थे। याकूब जल्दी मर जाता है; आप जानते हैं कि यूहन्ना वास्तव में बहुत लंबे समय तक जीवित रहता है। जॉन 90 के दशक तक जीवित रहता है, संभवतः 98 ई. तक जब वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिख रहा था। तो पीटर, जेम्स और जॉन, रूपांतरण में थे। एक लड़की है जो मृतकों में से जी उठी है, यीशु, बारह शिष्यों में से, वह केवल तीन को लेता है: पीटर, जेम्स और जॉन, इस लड़की को ठीक करने के लिए।

यीशु गेथसेमेन के बगीचे में प्रार्थना कर रहे हैं। यीशु जहाँ प्रार्थना करने जा रहे हैं, वहाँ उनके साथ कौन जाता है? पीटर, जेम्स और जॉन। तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि पीटर, जेम्स और जॉन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे आंतरिक तीन हैं, और फिर आपको क्रूस पर यीशु का यह सुंदर कथन मिलता है और यह बिल्कुल अविश्वसनीय है। यीशु क्रूस पर हैं, उन पर से टार निकाला गया है। उन्हें कोड़े मारे गए हैं, उन्हें पीटा गया है, उन्होंने क्रूस उठाया है, और अब उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया है। फिर अध्याय 19 श्लोक 26 में, यहाँ यीशु कहते हैं, "क्रूस से, अपनी क्रूर दुष्ट मृत्यु और क्रूस पर चढ़ने से एक बहुत ही दर्दनाक मृत्यु के कगार पर, "जब यीशु ने अपनी माँ को वहाँ देखा, और जिस शिष्य से वह प्रेम करता था, वह पास में खड़ा था।" तो आपको यीशु क्रूस पर दिखाई दे रहे हैं, उनकी माँ यहाँ हैं, जिस शिष्य से यीशु प्रेम करता था वह पास में खड़ा है, जिस शिष्य से यीशु प्रेम करता था, वह वही है जिसने यह पुस्तक लिखी है, और उसने अपनी माँ से कहा, "प्रिय महिला, यह तुम्हारा बेटा है।" और शिष्य से कहा, 'यह तेरी माँ है।' और इसलिए आप यीशु को क्रूस से उतारते हुए देखते हैं, ठीक इससे पहले कि वह इस सारे दर्द और पीड़ा में मर रहा हो, उसे

अपनी माँ की देखभाल करते हुए पीटा गया और उसने कहा, "माँ, यह तेरा बेटा है, यह तेरा बेटा है, यह तेरी माँ है।" दूसरे शब्दों में, जिस शिष्य से मैं प्रेम करता हूँ, अब तुम मेरी माँ की देखभाल करो। मैं मरने जा रहा हूँ, मैं अपनी माँ की देखभाल नहीं कर सकता, तुम, जिस शिष्य से मैं प्रेम करता हूँ, मेरे लिए मेरी माँ की देखभाल करो। अन्य लोगों के लिए यीशु की चिंता बिल्कुल अविश्वसनीय है। वह मर रहा है और फिर भी उसकी चिंता उसकी माँ के लिए है, और यह शिष्य जिस पर वह भरोसा करता है, और यह शिष्य जिस पर वह विशेष रूप से अपनी माँ की देखभाल के लिए भरोसा करता है, इस शिष्य में उसका विश्वास दिखाता है।

V. सुसमाचार के बाद पतरस के साथ निकटता [61:11-64:15]

पीटर और जॉन का घनिष्ठ संबंध केवल सुसमाचारों में ही नहीं है: यीशु के मृतकों में से जी उठने के बाद, रूपांतरण, गतसमनी, मृत लड़की का उपचार, पीटर, जेम्स और जॉन, हमने अभी-अभी इसके बारे में जाना। लेकिन बाद में प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रेरितों के काम अध्याय 3 में अपंग का उपचार है, अनुमान लगाइए कि यह पीटर और जॉन है। प्रेरितों के काम अध्याय 3 पद 1 में अपंग का उपचार, अध्याय 8 पद 14 में सामरी लोग, फिर से कौन? पीटर और जॉन। प्रेरितों के काम अध्याय 4 पद 19 में महासभा के समक्ष, यह पीटर और जॉन हैं। तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि पीटर और जॉन घनिष्ठ हैं। पीटर और जॉन दोनों गलील की झील के मछुआरे थे। तो पीटर और जॉन घनिष्ठ हैं और इसलिए मैं यहाँ जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि जिस शिष्य से यीशु प्रेम करते थे वह वास्तव में जॉन है। अब फिर से, मैं स्थगित करता हूँ मुझे इस बारे में सोचने की ज़रूरत है कि डॉ हंट इस बारे में क्या कहते हैं। मुझे बस इस तरह से निष्कर्ष निकालना है। जॉन वह शिष्य था जिससे यीशु प्रेम करते थे। दरअसल, पॉल ने गलातियों 2 में भी पतरस, याकूब और यूहन्ना को गलातियों 2:9 में चर्च के स्तंभों के रूप में एक साथ रखा है। तो, मैं बस इस तरह से निष्कर्ष निकालता हूँ, यूहन्ना की पुस्तक के लेखक ने खुद को कैसे पहचाना? उसने खुद को इस रूप में पहचाना: वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता था। हम ईसाई विश्वदृष्टिकोण और आप अपनी दुनिया को कैसे देखते हैं, इस बारे में बहुत बात करते हैं। आप दुनिया को कैसे देखते हैं? आप कुछ ऐसा चाहते हैं जो आपके जीवन को हमेशा के लिए बदल दे। आप दुनिया को देखने के तरीके को

बदलना चाहते हैं। खुद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखें जिसे यीशु प्यार करता था और यह जानते हुए जीवन गुजारें कि आपसे प्यार किया जाता है, यह जानते हुए जीवन गुजारें कि सर्वशक्तिमान ईश्वर, यीशु मसीह आपसे प्यार करते हैं जिन्होंने अपना खून दिया और आपके लिए मर गए। यह जानना है, जीवन की सारी अराजकता, सभी अस्वीकृति, सभी असफलताओं, जीवन की सभी गड़बड़ियों के बीच, यह जानते हुए जीवन गुजारना कि आप ईश्वर के प्रिय व्यक्ति हैं। यह दुनिया को देखने के आपके तरीके को बदल देता है। दुनिया अब अराजकता और अवसाद और सभी प्रकार की गंदी चीजों का स्थान नहीं है। परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, और अचानक यह जान लेना कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, पूरी दुनिया को देखने का आपका नज़रिया बदल देता है। यह प्रिय शिष्य था। यह वह शिष्य है जिससे यीशु प्रेम करता था। हाँ, यीशु मुझसे प्रेम करता है, आपका जीवन हमेशा के लिए बदल देता है। हम अगली बार यूहन्ना की पुस्तक के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

राबे द्वारा लिखित
बेन बोडेन द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ